IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

ग्रामजीवन पदयात्रा

डॉ. निलेश कापडिया
सहायक प्रोफेसर
हिन्दी शिक्षा विभाग, शिक्षा संकाय,
गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद

सारांश

सन 1920 में महात्मा गांधी जी द्वारा स्थापित गूजरात विद्यापीठ में 2007 से ग्रामजीवन पदयात्रा का आयोजन कीया जाता है, उसको उजागर करना प्रस्तुत प्रपत्र का प्रमुख उद्देश्य है। प्रपत्र में औपचारिक शिक्षा की तुलना में गांव की जीवनपयोगी शिक्षा की बात की गई है । गूजरात विद्यापीठ के सभी विभाग के छात्रो और प्राध्यापक गण चार दिन इस कार्यक्रम में हिस्सा लेते है। शिक्षक-प्रशिक्षण क्षेत्र में काम करनेवाले लोग इस प्रयोग को अच्छी तरह समज सके उस उद्देश्य से ग्रामजीवन पदयात्रा के विभिन्न पहलूं जेसे कि गांव की सुविधाए, सामाजिक रीतिओं और ग्रामीण जीवन के बारे में समजने का प्रयास कीया गया है। अंत में इस पदयात्रा से प्रशिक्षार्थी को मिलने वाले लाभ की चर्चा की गई हैं । ग्रामजीवन पदयात्रा प्रशिक्षार्थी की सामाजिक उत्तरदायित्व को विकसित करने में बडी भूमिका निभा सकते है। समाज की समस्याओं को समझने और सुलझाने में ग्रामजीवन पदयात्रा उपयोगी है। भावी शिक्षक और जिम्मेदार नागरिक के लिए आवश्यक कई कौशल इस पदयात्रा से विकसित हो सकते हैं।

प्रमुख शब्द : ग्रामजीवन, पदयात्रा, प्रयोग

महात्मा गांधीजी ने आजादी से पहले जन-जन की सत्ता का सपना देखा था। अभी की शिक्षा सिर्फ पठन, लेखन और गणन से आगे नही बढी है। गांधीजीने 3H यानी Head, Heart और Hand की बात कही थी जिसका मतलब बच्चे का सर्वांगीण विकास था। गांधीजी ऐसी सामाजिक और आर्थिक रचना के हिमायती नही थे, जो केवल भौतिक मूल्यों की बुनियाद पर खडी हो। वे सदा सरल और सादा जीवन तथा उच्च विचार का प्रतिपादन करते थे। लेकिन आज शिक्षको ने अपनी भूमिका और उत्तरदायित्वों को मर्यादित बनाकर रखा है। गांधीजी मेरे सपनोंका भारत में कहते है की, 'मेरा विश्वास है और मैंने इस बातको असंख्य बार दुहराया है कि भारत अपने चन्द शहरोंमें नही बल्की सात लाख गांवोंमें बसा हुआ है। लेकिन हम शहरवासियों का खयाल है कि भारत शहरोंमें ही है और गांवोंका निर्माण शहरोंकी जरूरतें पूरी करनेके लिए ही हुआ है। हमने कभी यह सोचनेकी तकलीफ ही नही उठाई कि गरीबोंको पेट भरने जितना अन्न और शरीर ढकने जितना कपडा मिलता है या नहीं और धूप तथा वर्षासे बचनेके लिए उनके सिर पर छप्पर है या नहीं'। हरिजन पत्रिका में दिनांक 04/04/1936 को गांधीजीने लिखा 'मैंने पाया है कि शहरवासियोंने आम तौर पर ग्रामवासीयों का शोषण किया है, सच तो यह है कि वे गरीब ग्रामवासियोंकी ही महेनत पर जीते है। भारतके निवासियोंकी हालत पर कई ब्रिटिश अधिकारियोंने बहुत कुछ लिखा है। जहां तक मैं जानता हूं किसीने भी यह नही कहा कि भारतीय ग्रामवासियोंको भरपेट अन्न मिलता है। उलटे, उन्होंने यह स्वीकार किया है कि अधिकांश आबादी लगभग भुखमरीकी हालतमें रहती है, दस प्रतिशत अधभूखी रहती है और लाखों लोग चुटकीभर नमक और मिर्चो के साथ मशीनों का पालिश किया हुआ नि:सत्व चावल या रुखासूखा अनाज खाकर अपना गुजारा चलाते है'। गांधीजी ने गाँव के लोगो की परेशानी का वर्णन करते हुए कहा है की 'हमें सोचना है कि जिस पोखर में वे नहाते हैं और अपने कपडें तथा बरतन धोते हैं और जिसमें उनके पशु लोटते और पानी पीते हैं, उसी में से हमें भी उनकी तरह पीने का पानी लेना पड़े तो हमें कैसा लगेगा'। ग्राम-सुधार आन्दोलन में केवल ग्रामवासियों के ही शिक्षण की बात नही है; शहरवासियों को भी

उससे उतना ही शिक्षण लेना है। इस काम को उठाने के लिए शहरों से जो कार्यकर्ता आयें, उन्हें ग्राम-मानस का विकास करना है और ग्रामवासियों की तरह रहने की कला सीखनी है (मेरे सपनों का भारत)।

जोशी एवं दीक्षित (2012) वर्तमान शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम की समाजोन्मुखता के बारे मे कहते है कि, शिक्षक के उत्तरदायित्व को मात्र वर्गखंड तक सिमित कर दिया है तथा मात्र तद्संबंधित कौशल्यो को ही सीखाया जा रहा है। जिसके परिणाम स्वरूप शिक्षको को न तो सामाजिक समस्याओं की जानकारी होती है, न उसके कारणों के खोज के प्रति रुचि। इस दिशा में पर्याप्त शिक्षण-प्रशिक्षण न मिलने के कारण शिक्षकों में इन समस्याओं के समाधान के लिए अपेक्षित ज्ञान एवं कौशल्य का विकास भी नहीं हो पा रहा है। इसलिए शिक्षण-प्रशिक्षण से तैयार हुआ शिक्षक आजीवन समाज की उपेक्षा कर अपने आप में सिमित रहता है। प्रस्तुत प्रपत्र में गूजरात विद्यापीठ के शिक्षा संकाय द्वारा शिक्षक-प्रशिक्षण में प्रयोजित पदयात्रा के प्रयोग पर प्रकाश डाला गया हैं।

ग्रामजीवन पदयात्रा के उद्देश्य

- प्रशिक्षार्थी की समाज के प्रति जिम्मेदारी का विकास करना
- सामाजिक समस्याओं के प्रति प्रशिक्षार्थी को जागृत करना
- समाज और शिक्षा के बीच संबंध स्थापित करना
- समाज की ऊन्नति में प्रशिक्षणार्थी की भूमिका स्पष्ट करना
- नेतृत्व के गुण विकसित करना
- गांवमें कार्यक्रमों का आयोजन और संचालन की क्षमता का निर्माण करना
- प्रशिक्षार्थीओ में विभिन्न कौशल का विकास करना

ग्रामजीवन पदयात्रा की आचारसंहिता

- हकारात्मक अभिगम रखना
- परिवार की भावना विकसित करना
- समाज के विभिन्न वर्ग में भोजन करना
- लोगों के साथ आत्मीयता से बात करना
- सामान्य जन की भाषा में बात करना
- अच्छा श्रोता बनना
- सबके साथ अनुकूलन साधना
- राजकीय पक्षपात से दुर रहना
- लोगों की धार्मिक भावनाओं का ध्यान रखना
- टीमवर्क से काम करना
- समयपालन करना और दिनचर्या लिखना
- कठीन परिस्थिति में हिंमत से काम लेना

ग्रामजीवन पदयात्रा के कार्यक्रम

ग्रामजीवन पदयात्रा का कार्यक्रम चार हिस्सों में बांटा गया है।

1. साक्षरता- साक्षरता किसको कहते है? लोकतंत्र और साक्षरता के बीच क्या संबंध है? गांवमें साक्षरता बढाने के लिए क्या कर सकते हो? साक्षरता के बिना जीवन कैसा होता है?
2. व्यसनमुक्ति- गांवमें कौन से व्यसन है? व्यसन दूर करने में बहनों की भूमिका क्या होगी? पुलीस की भूमिका कैसी है?
3. स्वच्छता- स्वच्छता के लिए पाठशाला, ग्राम पंचायत, बहनें, गांव के बुझुर्ग क्या कर सकते है? शौचालय की कैसी सुविधा है?
4. ग्रामउत्थान- यह गांव किसका है? गांववालों के अधिकार क्या है और कर्तव्य क्या है?

उपरोक्त प्रश्नो के माध्यम से प्रशिक्षार्थीओं गांव का चोराहा, बस स्टेशन, पंचायत, आदि सार्वजनिक स्थान पर यह कार्यक्रम करते है। जिसमें नाटक, समूहगान, गीत, गरबा, माईम, प्रदर्शन, पोस्टर आदि प्रयुक्ति से जन शिक्षा का कार्य करते है। प्रशिक्षार्थी ग्रामीणों से जुड़ने के लिए उनके घरों में जाकर उनकी कठिनाइयों को समझने का भी प्रयास करते हैं। वे पाठशाला में भी जाते हैं और गीतों, कहानियों और नाटकों के माध्यम से बच्चों के बीच स्वच्छता, साक्षरता आदि के संदेश फैलाते हैं।

ग्रामजीवन पदयात्रा के लाभ

प्रशिक्षार्थी समाज की समस्याओं को पाठ्यपुस्तक से नहीं लेकीन प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करता है। समस्याओं का हल लोगों के सहयोग से ढूढंने का प्रयास करता है। प्रशिक्षार्थी में नेतृत्व का गुण विकसित होता है। समूहमें काम करने की क्षमता बढती है। समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी का अहेसास होता है। सभा संचालन, संवाद, अभिनय आदि कौशलो का विकास होता है। संवेदनशीलता और सृजनात्मकता बढती है। समाज में व्याप्त बुराईयां और अच्छाईयां दोना का परिचय होता है। प्रशिक्षार्थी का सामाजिकरण होता है। समाज में जागृति फेलाई जा सकती है। प्रशिक्षार्थी सामाजिक समरसता की और आगे बढ सकते है। विभिन्न सामाजिक प्रश्नो को समजने और सुलझाने की क्षमता प्राप्त होती है। प्रत्येक गांव में अपनी यात्रा के दौरान, प्रशिक्षार्थी ग्रामीणों में स्वच्छता, साक्षरता, नशे का नुकसान और ग्राम सभा के लाभ आदि के बारे में जागरूकता लाने का प्रयास करते हैं।

उपसंहार

गांधीजी वास्तव में ग्रामीण अंचलों में रहनेवाले लोगों का स्वराज चाहते थे। उनका मानना था कि भारत की आत्मा उसकें गांवों में बसती है। वे सत्ता का परीवर्तन नीचे से चाहते थे। वे भारत में वास्तविक लोकतंत्र चाहते थे। उन्होंने कहा था वास्तविक लोकतंत्र केन्द्र में बैठे 20 लोगो द्वारा नहीं चलाई जा सकती है। वह नीचे से, गांव के प्रत्येक व्यक्ति द्वारा चलाई जानी चाहीए। गांधीजी के एकादश व्रत और रचनात्मक कार्यक्रम सही मायनों में समजने के लिए पदयात्रा उत्तम साधन है। पदयात्रा प्रशिक्षार्थी में सामाजिक उत्तरदायित्व को विकसित करने में बडी भूमिका प्रदान करता है। गांवो के प्रति हमारी विमुखता और उदासीनता पदयात्रा जैसे कार्यक्रम से कम कर सकते है।

संदर्भसूचि

गांधीजी, (1960). मेरे सपनोंका भारत. अहमदाबाद : नवजीवन प्रकाशन मंदिर

गांधीजी, (1963). ग्राम स्वराज्य. अहमदाबाद : नवजीवन प्रकाशन मंदिर

जोशी, भ. और दीक्षित, म. (2012). समुदाय-शिक्षण प्रतिमानः एक प्रयोग. *संदर्भ,* 2(1), 77-84

सवलिया, बि. और अन्य. (2011). ग्रामीण गांधीय विचार. नई दिल्ली : यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन